

978-81-7450-886-7

प्रथम संनेकरण : अवत्वर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पीप 1931

ग्रिक्शिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्भाण समिति

कंचन सेटी. कृष्ण कुमार, ज्यांति सेटी, दुलदुल विश्लास, भुकंश भालवीय, राधिका मेदन, सालिनी शर्मा, लक्ष पाण्डे, स्थांति वर्मा, सारिका वशिष्ट, स्रोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुसोल शुक्त

सदस्य-समन्वयक -- लितका गुप्ता

चित्रांकन - निधि वाधवा

सन्ता तथा आवरण — निधि वाधवा डी.टी.पी. ऑपरेटर — अर्थन गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन 🕝

प्रोफ्रेसर कृष्ण बुस्तर, निर्देशक', राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ्रेसर क्षुण कामय, संयुक्त विदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोप्रोणिको संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ्रेसर के, के, के, बिल्ली; प्रोफ्रेसर के, के, बिल्ली; प्रोफ्रेसर के, के, बिल्ली, प्रोफ्रेसर प्रप्राचक शिक्षा विधान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ्रेसर मंजुला पाष्ट्रद, जध्यक, शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ्रेसर मंजुला पाष्ट्रद, जध्यक, शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोधः वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुल्फित, प्रधासा गांधी अंदर्शधूरीव विदी विरुवविद्यालय, वर्धाः प्रोफेसर करीयः अन्तुल्ला स्नान, विश्वनाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जानिया निलिया इस्लामिया, दिल्लीः डा. अपूर्वविद, खेडर, हिंदी विभाग, विरुवविद्यालय, दिल्लीः डा.शबनय सिन्दा, सी.ई.ओ., आई.एस. एवं एफ.एफ. एंचईः सुश्री तुनकत हनन, निदेशका, नेशनल बुक्ष १स्ट, नई दिल्लीः वी संहित भनकर. विदेशका, दिगंतर, जयपुष

\$0 मी.प्स.एड. चेनर का सुद्रित

प्रकारत विभाग में भारत, राष्ट्रीय रोक्षिक जनुसंधान और प्रशिक्षण क्विक्त, की अमेनिक गार्ग. वई दिल्ली 110006 द्वारा प्रकाणित तथा पंथाय विधित प्रेस. डी-28, इडर्डस्ट्यल परिया, साइट-ए, प्रपुर 281000 हाथ मुक्तिः वरका क्रीमक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कथा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देश है। वरका की क्रहानियों चार स्वयं और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। वरका बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोडमर्च की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों कैसी रोचक लग्नी हैं, इसलिए 'अरखा' की सभी कहानियों दैनिक जीवन के अनुषयों पर आधारित हैं। वरखा पुस्तकमस्ता का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पड़ते के लिए प्रचुर माझ में कितायों मिले। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायों पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हरेशा कथा में ऐसे स्थान पट एखें जहीं से बच्चों असानी से कितायों उटा मके।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुस्रति के सिन इस प्रकारण के किसी भाग को छायन तथा इत्तेयदृष्टकेती, क्रांति, कोरोप्रशिक्षिप, रिकडेंडिय अधवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रमाग प्रकार द्वारा उसका मणहण अधवा प्रकारण वर्षित है।

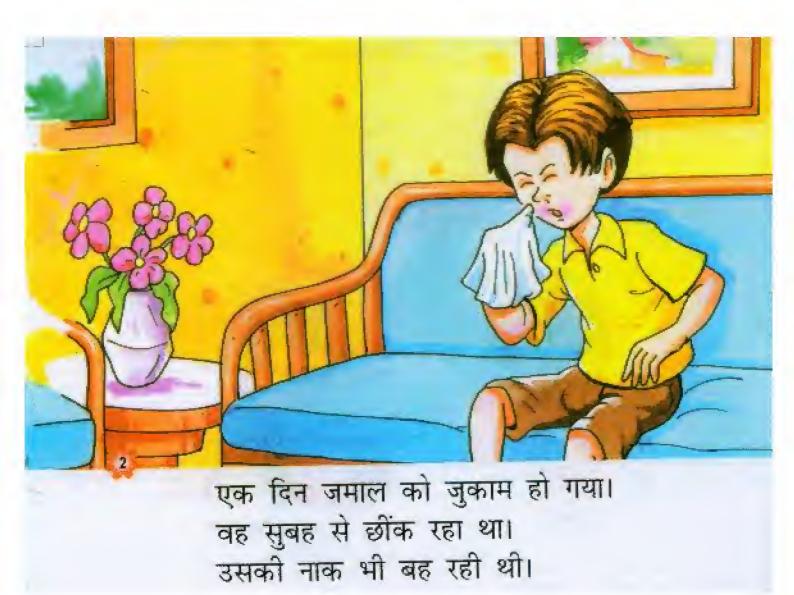
इन.सं.इं.स्साटी, के प्रकाशन कियान के कार्यातय

- ण्यामी द्वेश्वरात्मी, कैंगसा, की वसकिए पार्य, वर्गा किल्लो (हा। काठ प्रतेष : का1-26562708)
- हाल, 100 प्रीट सेंड, इसी एक्स्ट्रेशन, होलोकोर्च, बनायोक्ट स्टेब, भेग्य्यु 500 085 महिल 1000-20025040
- प्रशासिक हार: प्रका, अंक्षिप्ट स्वामीयन, अहमदावन, १६० (०) प्रकेट : (१११-३१५-४१६)
- स्री, वरण्युची, केयम, विकार, भवन्यस यह स्टीप पविच्छी, प्रोतकाला २०० ११४ क्लेन । 033-25530454
- भी उद्यम् मी, कॉम्प्लेक्न, पालीगीन, गुक्तमंती १६६ (६६) स्थित । ६६६६-१५/५४%?

क्रकाराव सहजोग

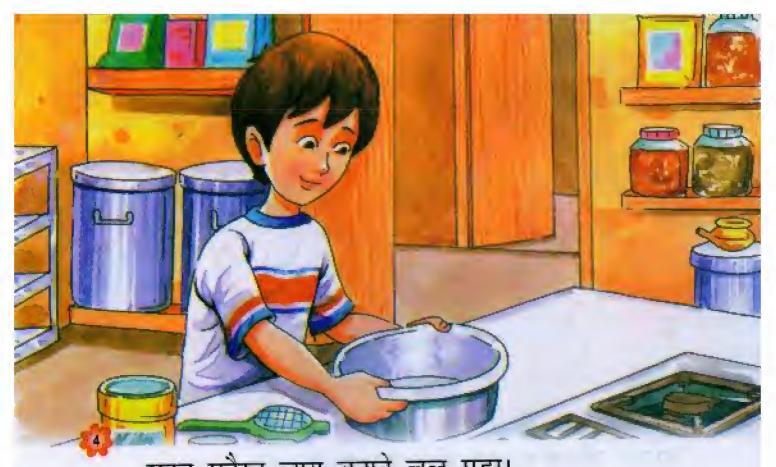
सम्बद्धतः, जन्मधन विभागः : की, राज्यकुः भार मुख्यः संभावतः : स्रोता समस्य मुख्य उत्पादन अधिकारी : लिक कुमार नृष्ट्य व्यापन अधिकारी ; सीतम कांगुली



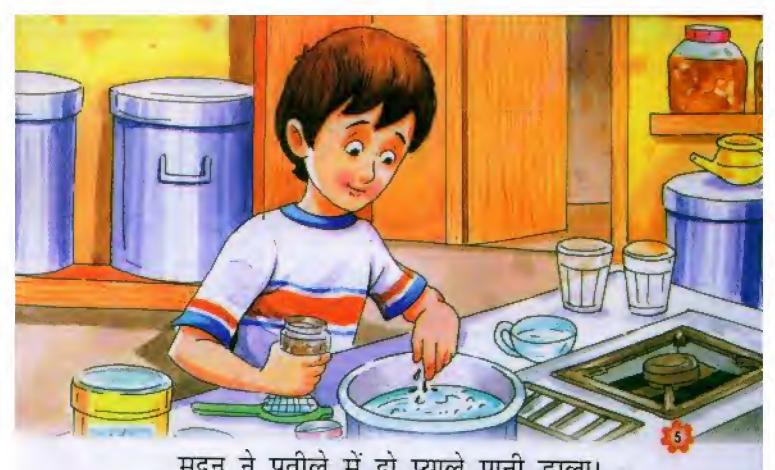




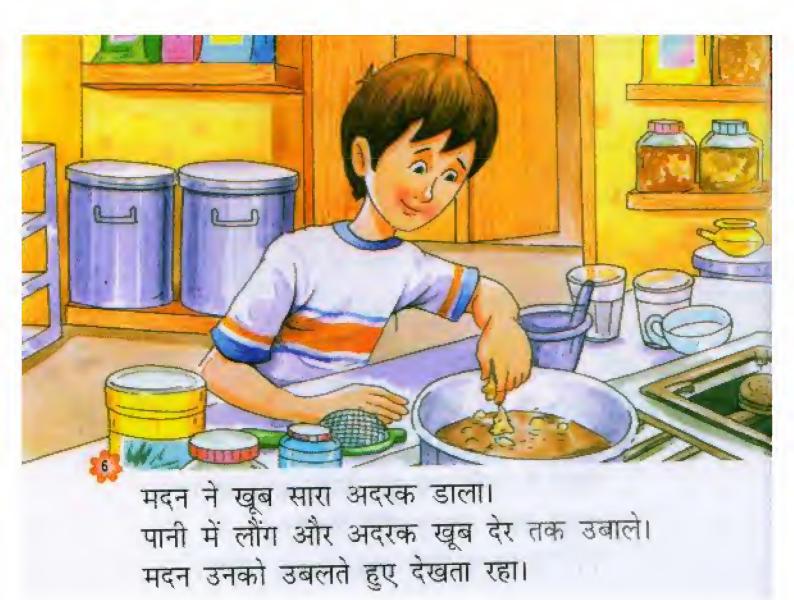
जमाल का मन चाय पीने का हुआ। रोज़ की तरह मदन उसके घर पर ही था। जमाल ने उससे कहा कि चाय पीने का मन हो रहा है।

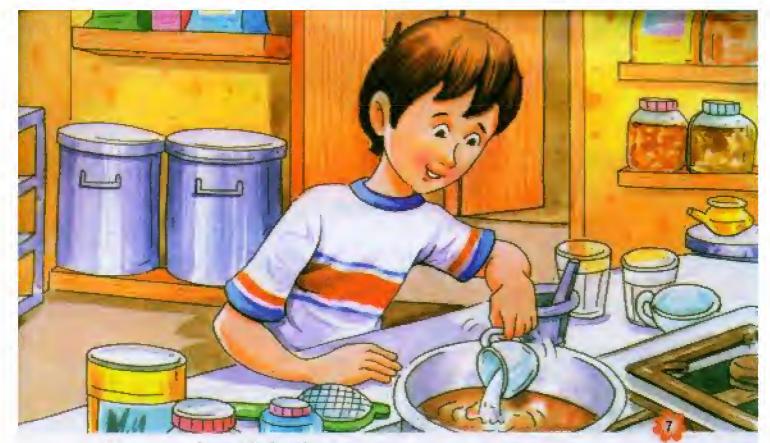


मदन फ़ौरन चाय बनाने चल पड़ा। उस दिन मदन पहली बार चाय बना रहा था। उसने पहले कभी चाय नहीं बनाई थी।

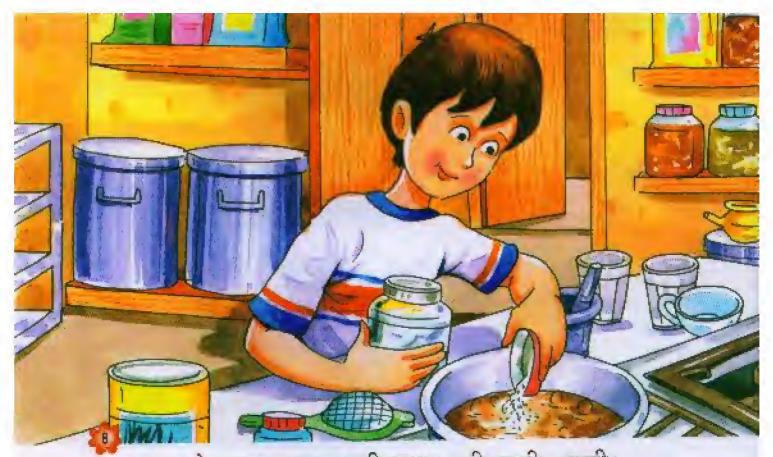


मदन ने पतीले में दो प्याले पानी डाला। उसने पानी में दो लौंग डालीं। फिर मदन ने पानी उबलने रख दिया।





फिर उसने पतीले में आधा प्याला दूध डाला। मदन ने उबलते हुए पानी में दो चम्मच चीनी डाली। उसने पानी में दूध डालकर खूब देर उबाला दिया।



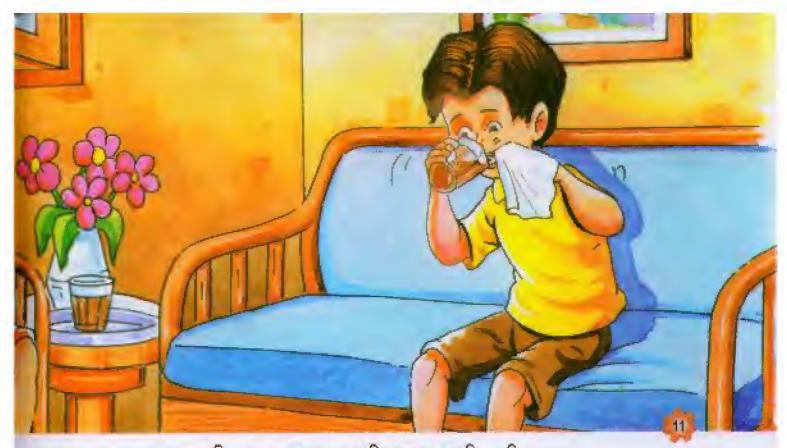
इसके बाद खूब सारी चाय की पत्ती डाली। मदन ने पत्ती डालकर चाय को खूब उबाला। चाय का रंग खूब गाढ़ा हो गया था।



मदन ने चाय दो गिलासों में छानी। उसने दोनों गिलासों में चाय बराबर डाली। चाय थोड़ी कम थी।



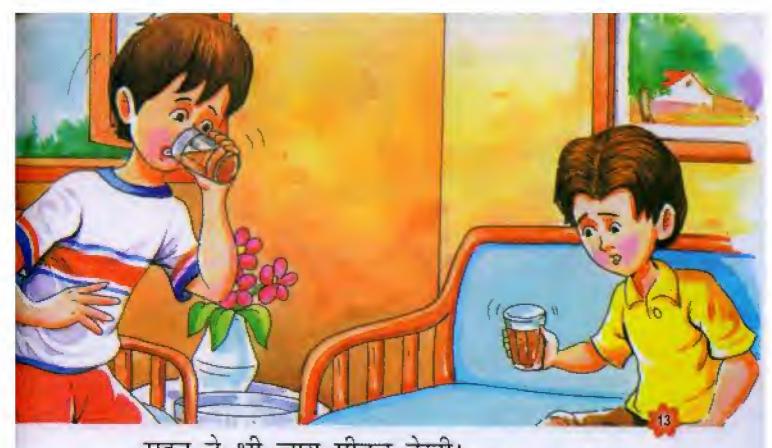
मदन ने चाय के गिलास एक थाली में रख लिए। वह बड़े प्यार से जमाल के लिए चाय लेकर आया। उसने बड़े प्यार से जमाल को चाय दी।



जमाल की नाक अब भी बह रही थी। उसने चाय का गिलास हाथ में लिया। जमाल ने नाक पोंछते हुए चाय का एक घूँट पीया।



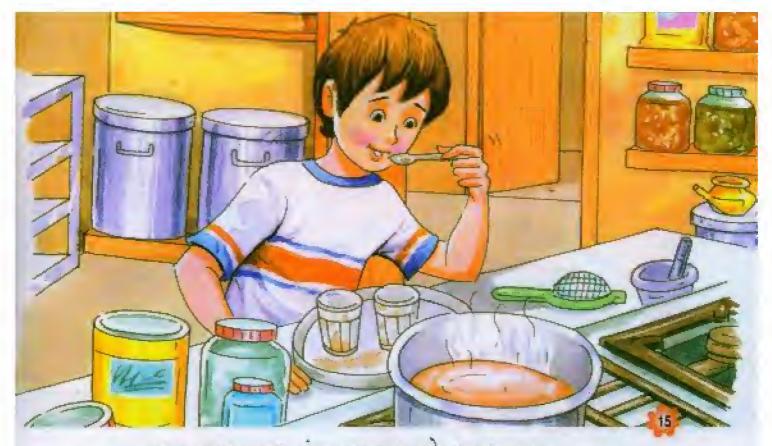
जमाल ने सारी चाय थूक दी। चाय बहुत कड़वी थी। वह बोला कि चाय है या कड़वी दवा।



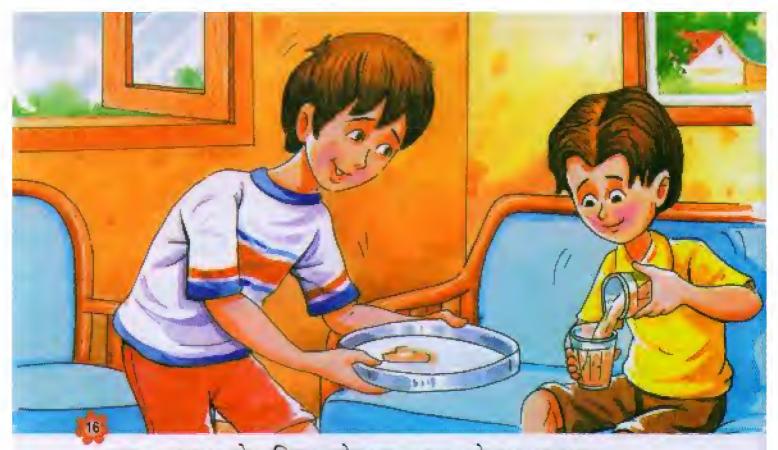
मदन ने भी चाय पीकर देखी। चाय में चीनी कम थी। अदरक और पत्ती बहुत ज्यादा डल गई थी।



मदन ने दोनों की चाय वापस पतीले में डाली। उसने चाय में चीनी और दूध डाला। चाय को फिर से उबलने रख दिया।



अब चाय का रंग हल्का हो गया था। मदन ने चम्मच से निकाल कर चाय चखी। चाय अब अच्छी हो गई थी।



वह जमाल के लिए दोबारा चाय लेकर आया। जमाल को इस बार चाये अच्छी लगी। उसने मदन की चाय भी अपने गिलास में डाल ली।







2085



₹. 10,00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING